



सम्पादकीय

भारतीय भाषाओं का वैश्विक मान, शिक्षा में मातृभाषा की शक्ति और सांस्कृतिक स्वाभिमान की पुनर्प्रतिष्ठा

देश के शैक्षणिक परिदृश्य और प्रशासनिक व्यवस्था में भारतीय भाषाओं की पुनर्प्रतिष्ठा तथा उन्हें वास्तविक दर्जा दिलाने के लिए जिस प्रकार ऐतिहासिक और ठोस प्रयास किए जा रहे हैं, उसने हमारी नई पीढ़ी में एक अभूतपूर्व सांस्कृतिक स्वाभिमान और भाषाई गौरव का संचार किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दूरगामी प्रावधानों के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा से लेकर तकनीकी और उच्च शिक्षा तक मातृभाषा तथा क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग को निरंतर प्रोत्साहन देने के फैसले ने देश के ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों के करोड़ों प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए नए अवसरों और उज्ज्वल भविष्य के द्वार खोल दिए हैं। विगत कई दशकों में केवल एक विदेशी भाषा अंग्रेजी के वर्चस्व और उसकी अंधी बौद्धिक गुलामी के कारण देश की बहुमूल्य प्रतिभाएं, मौलिक चिंतन और स्वदेशी वैज्ञानिक शोध बुरी तरह पिछड़ रहे थे, किंतु अब इस मानसिक दार्यता की स्थिति में बहुत बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है। घटना के इस अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरगामी पहलु पर गहराई से विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि दुनिया का कोई भी स्वाभिमानी देश अपनी मूल भाषा, लिपि और सांस्कृतिक जड़ों को पूरी तरह काटकर कभी भी वास्तविक उन्नति और बौद्धिक शिखर तक नहीं पहुँच सकता है। चिकित्सा विज्ञान, अभियांत्रिकी, कानून और प्रबंधन जैसे अत्यंत जटिल व्यावसायिक विषयों की पढ़ाई हिंदी तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराया जाना देश की सदियों पुरानी शिक्षा व्यवस्था में एक युगांतरकारी और क्रांतिकारी कदम सिद्ध हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय मंचों और दुनिया के प्रमुख डिजिटल तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्लेटफॉर्मों पर भी आज भारतीय भाषाओं की स्वीकार्यता तथा मांग लगातार बढ़ रही है, जो हमारी समृद्ध भाषाई विरासत और ज्ञान परंपरा की संपन्नता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। तथापि केवल सरकारी आदेशों, कागजी प्रस्तावों और प्रशासनिक नीतियों पर निर्भर रहने के बजाय हमारे प्रबुद्ध समाज, मीडिया, न्यायपालिका और जागरूक नागरिकों को भी अपनी दैनिक बातचीत तथा पठन-पाठन में स्वदेशी भाषाओं के प्रयोग को सहर्ष प्राथमिकता देनी होगी। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी सभी पाठ्य भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक, डिजिटल संसाधनों, इंटरनेट और उच्च स्तरीय शोध पत्रिकाओं के साथ और अधिक सुसंगत तथा समृद्ध बनाएं ताकि भारत अपनी भाषा और ज्ञान-विज्ञान के बल पर विश्व में अपनी श्रेष्ठता को पुनः निर्विवाद रूप से सिद्ध कर सके।

अनसुने प्रसंग- क्षेपक कथा

जब राजा शिवि ने एक कबूतर के प्राण बचाने के लिए अपने स्वयं के शरीर का मांस तोल दिया था

भक्तमाल और पुराणों के पावन इतिहास में राजा शिवि की अगाध शरणागत रक्षा और त्याग की यह अमर कथा संपूर्ण मानव समाज के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है। प्राचीन काल में राजा शिवि अपने अद्वितीय न्याय, सत्यनिष्ठा और शरणागत की रक्षा के संकल्प के लिए तीनों लोकों में विख्यात थे। एक दिन देवराज इंद्र और अग्निदेव ने राजा शिवि की धर्मनिष्ठा की परीक्षा लेने का निर्णय लिया और अत्यंत दिव्य लीला रंची। अग्निदेव ने एक भयभीत कबूतर का रूप धारण किया और देवराज इंद्र एक हिंसक बाज पक्षी बनकर उस कबूतर का पीछा करने लगे। वह असहाय कबूतर अपनी जान बचाते हुए उड़ता हुआ आया और राजा शिवि की गोद में गिरकर अत्यंत आर्त स्वर में अपनी रक्षा की गुहार लगाने लगा। राजा शिवि ने उस नन्हें पक्षी को सहलाते हुए उसे पूरी अभयता दी और अपने प्राण देकर भी उसकी रक्षा करने का पावन वचन दे दिया। तभी विशाल बाज पक्षी उड़ता हुआ राजा के सामने आया और कहने लगा कि राजन यह कबूतर मेरा स्वाभाविक आहार है इसलिए आप मेरा भोजन छीनकर अधर्म कर रहे हैं। राजा शिवि ने अत्यंत विनम्रता से बाज से कहा कि शरणागत की रक्षा करना मेरा परम धर्म है इसलिए तुम इस कबूतर के बदले में मेरा संपूर्ण राज्य या कोई अन्य मांस मांग लो। बाज ने चतुरता दिखाते हुए शर्त रखी कि यदि आप इस कबूतर को बचना चाहते हैं तो इसके भार के बराबर अपने शरीर का मांस काटकर मुझे दे दीजिए। धर्मनिष्ठ राजा शिवि ने बिना किसी संकोच या भय के तुरंत तराजू मंगवाया और उसके एक पलड़े पर उस छोटे से कबूतर को बैठा दिया। राजा अपने दाहिने अंग से अपनी जांच का मांस काटकर तराजू के दूसरे पलड़े में रखने लगे किंतु कबूतर का पलड़ा भारी ही रहता था। राजा शिवि जितना अधिक मांस काटकर रखते जा रहे थे वह कबूतर का पलड़ा उतना ही भारी होता जा रहा था और जरा सा भी ऊपर नहीं उठ रहा था। अंत में जब शरीर पर मांस शेष नहीं बचा तब राजा शिवि स्वयं मुस्कुराते हुए उस तराजू के पलड़े पर जाकर बैठ गए और अपना पूरा शरीर समर्पित कर दिया। राजा के इस अद्वितीय त्याग, दया और शरणागत रक्षा के धर्म को देखकर देवराज इंद्र और अग्निदेव अपने वास्तविक दिव्य रूप में साक्षात प्रकट हो गए। देवताओं ने पुष्पों की वर्षा करते हुए राजा शिवि के शरीर को पुनः पूर्ण स्वस्थ और दिव्य बना दिया तथा उनकी कीर्ति को तीनों लोकों में अमर होने का महान वरदान प्रदान किया।

सितारों की चाल: आपका भविष्यफल

कल का दिन कैसा होगा? इसकी तैयारी आज ही करें!



शुभकार्य हेतु आज का चंद्रबल

आज मेष मिथुन सिंह तुला वृश्चिक और कुंभ राशि के जातकों का मानसिक मनोबल और भाग्य का संबल अत्यंत उत्तम रहेगा। मंगलवार का दिन संकटमोचन हनुमान जी और ग्रहों के सेनापति मंगल देव की आराधना के लिए परम पवित्र और अक्षय फलदायी माना जाता है। आज के दिन हनुमान मंदिर में चमेली के तेल का दीपक जलाने तथा सुंदरकांड का पाठ करने से जीवन के सभी भय दूर होते हैं और अटक हुए कार्य तेजी से पूरे होते हैं।

मेघ

आज कार्यक्षेत्र में आपके पराक्रम और नेतृत्व क्षमता की खुलकर सराहना होगी जिससे आपका प्रभाव काफी बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में किए गए प्रयासों से अचानक बड़ा धन लाभ होने की पूरी संभावना बन रही है। हनुमान जी को सिंदूर और चोला अर्पित करें जिससे आपके सभी संकट दूर हों।

तृष

आज व्यापार में किसी नए प्रोजेक्ट पर काम शुरू करने का बहुत ही अनुकूल समय है और पुराने मित्रों का सहयोग मिलेगा। पारिवारिक जीवन में सुख और शांति का वातावरण बना रहेगा जिससे आपका मन प्रसन्न रहेगा। किसी जरूरतमंद को लाल मसूर की दाल दान करें जिससे आपके भाग्य के द्वार खुलेंगे।

मिथुन

आज आपकी बौद्धिक क्षमता और तार्किक शक्ति से आपके सभी जटिल और रूके हुए कार्य तेजी से हल होंगे। विद्यार्थियों के लिए आज का दिन अध्ययन और प्रतियोगिता परीक्षा में बड़ी सफलता दिलाने वाला रहेगा। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें जिससे आपकी बुद्धि और कार्यकुशलता

 tnftoday

 tnftoday

www.tnftoday.com / epaper

पश्चिम के युवा बदलाव की लड़ाई लड़ रहे हैं, भारत के कॉंकरोच क्या कर रहे हैं?

○ बुज खंडेलवाल

क्या युवा सिर्फ नारे लगाने के लिए पैदा हुए हैं? क्या सड़कों पर भीड़ जुटाना ही क्रांति है? जब पश्चिम के युवा बेहतर शिक्षा, सस्ते मकान और बराबरी के लिए लड़ रहे हैं, तब भारत के कुछ युवा जो अपने को कॉंकरोचेस कहलाना पसंद करते हैं, आखिर किस जंग में उलझे हैं?

दुनिया बदल रही है। नई पीढ़ी पुराने निजाम से सवाल पूछ रही है। फ्रांस, बेल्जियम, स्पेन और जर्मनी में युवा सड़कों पर उतर रहे हैं। अमेरिका में भी महंगाई, मकानों के बढ़ते किराये और आर्थिक गैरबराबरी के खिलाफ आवाजें उठ रही हैं।

उनका सवाल सीधा है। पढ़ाई महंगी क्यों है? नौकरी मिलने के बाद भी घर खरीदना सपना क्यों है? अमीरों की दौलत बढ़ती जाती है, लेकिन आम परिवारों का बजट क्यों बिगड़ता जाता है?

यह सिर्फ गुस्सा नहीं है। यह अपने भविष्य को बचाने की लड़ाई है। और यही लड़ाई हुम्मरानों की नींद उड़ा रही है।

पश्चिम के युवाओं का एजेंडा क्या है? फ्रांस में छात्र खराब स्कूलों, शिक्षकों की कमी और दाखिले की मुश्किलों पर सवाल उठा रहे हैं। बेल्जियम में शिक्षा पर कटौती और बढ़ती फीस के खिलाफ आवाजें बुलंद हुई हैं। स्पेन में मकानों के आसमान छूते किराये ने नौजवानों का जीना मुश्किल कर दिया है।

किरावा चुकाएं या ज़िंदगी चलाएं? नौकरी करें या घर खरीदने का सपना देखें? पढ़ाई पूरी करें या कर्ज की गठरी उठाएं? ये सवाल किसी एक देश के नहीं हैं। पूरी दुनिया की युवा पीढ़ी इनसे जुझ रही है। जब सरकारें सुरक्षा और रक्षा पर अरबों



खर्च करने की तैयारी करती हैं, तो युवा पूछते हैं कि स्कूलों और विश्वविद्यालयों के लिए पैसा कम क्यों पड़ जाता है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद यूरोप की सुरक्षा चिंताएं वास्तविक हैं। लेकिन शिक्षा और रोजगार की कीमत पर हर फैसला जायज नहीं ठहराया जा सकता।

आखिर देश किसके लिए है? सिर्फ सीमाओं की हिफाजत के लिए, या उन नौजवानों के भविष्य के लिए भी, जिन्हें इन सीमाओं के भीतर अपनी ज़िंदगी बनानी है?

युवाओं का गुस्सा हमेशा किसी खास विचारधारा की पैदाइश नहीं होता। कभी-कभी निराशा ही सबसे बड़ी विचारधारा बन जाती है।

भारत के कॉंकरोचों की अलग कहानी! अब जरा भारत की तरफ आइए। यहां भी नौजवान नाराज हैं। बेरोजगारी है, प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव है और भर्ती के व्यवस्था पर सवाल उठते हैं। नोट जैसी परीक्षाओं से जुड़े विवादों ने लाखों परिवारों की चिंता बढ़ाई है।

युवा, समाज और आंदोलन—जब-जब युवा बोला, तब-तब भारत बदला!

○ डॉ. दीपक गोस्वामी

युवा समाज का इंजन है, व्यवस्था उसकी राह और आंदोलन गलत दिशा में दौड़ती व्यवस्था के विरुद्ध उठी चेतावनी। लेकिन हर आवाज परिवर्तन नहीं, हर भीड़ क्रांति नहीं और हर नारा सत्य नहीं होता। आंदोलन की असली शक्ति संख्या में नहीं, उसके उद्देश्य, नैतिकता, संगठन और परिणाम में होती है। आवाज उठाना साहस है, सत्य पर टिकना चरित्र और समाधान देना नेतृत्व।

भारत की युवा शक्ति उसकी सबसे बड़ी संभावनाओं में से एक है। वर्ष 2021 के अनुमान के अनुसार, 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग में लगभग 37.14 करोड़ युवा थे। यह अँकड़का वर्तमान जनसंख्या का नहीं, उस वर्ष के अनुमान का है। इतने विशाल युवा वर्ग की आकांक्षाएँ तभी राष्ट्रीय शक्ति बनेंगी, जब शिक्षा रोजगार से जुड़े, अवसर निष्पक्ष हों और प्रतिभा को आर्थिक या सामाजिक बाधाओं के कारण पीछे न रहना पड़े। जब परीक्षा की तैयारी वर्षों की हो और भर्ती की निष्पक्षता पर प्रश्न उठें, तब अस्तोषी जन्म लेता है। जब सुनवाई नहीं होती, तब यही अस्तोषी आंदोलन का रूप ले सकता है। भारत का इतिहास युवा चेतना के अनेक उदाहरण प्रस्तुत करता है। वर्ष 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध से स्वदेशी आंदोलन को गति मिली। विद्यार्थियों और युवाओं ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, स्वदेशी उत्पादन और राष्ट्रीय शिक्षा को समर्थन दिया। यह संघर्ष केवल राजनीतिक विरोध नहीं था; इसमें आर्थिक आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय स्वाभिमान का संदेश भी था।

भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और सुभाषचंद्र बोस ने अलग-अलग मार्गों से औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी। भगत सिंह की क्रांतिकारी गतिविधियों के साथ उनका अध्ययन और लेखन भी महत्वपूर्ण था। उनकी भूमिका को केवल अहिंसक प्रतिबंध बताना इतिहास को अधूरा करना होगा। आज उनकी विरासत से सीखने का अर्थ हिंसा का अनुकरण नहीं, बल्कि अन्याय के विरुद्ध विचार, साहस और संगठित प्रयास की शक्ति समझना है।

स्वतंत्र भारत में वर्ष 1973-74 का गुजरात नवनिर्माण आंदोलन महँगाई और भ्रष्टाचार के विरोध में विद्यार्थियों से शुरू होकर व्यापक जनआंदोलन बना। वर्ष 1974 में बिहार के छात्र आंदोलन को जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व मिला और संपूर्ण



क्रांति का आह्वान हुआ। वर्ष 1975 में आपातकाल लागू होने के बाद नागरिक स्वतंत्रताओं पर प्रतिबंधों ने लोकतंत्र की महत्ता और स्पष्ट की। इन घटनाओं का संदेश किसी एक नेता की सफलता तक सीमित नहीं है। लोकतंत्र तभी मजबूत होता है, जब नागरिक जागरूक हों, संस्थाएँ जवाबदेह हों और सत्ता से प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता सुरक्षित रहे।

वर्ष 1990 में केंद्र सरकार ने अन्य पिछड़े वर्गों के लिए केंद्रीय सरकारी सेवाओं में 27 प्रतिशत आरक्षण लागू करने का निर्णय लिया। इसके समर्थन और विरोध में व्यापक प्रदर्शन हुए। वर्ष 1992 में सर्वोच्च न्यायालय ने इंदरा साहनी मामले में निर्धारित शर्तों के अधीन इस व्यवस्था को बरकरार रखा। इस दौर ने सामाजिक न्याय, ऐतिहासिक वंचना और अवसरों की समानता पर तीखी बहस को जन्म दिया। इसकी सीख है कि अधिकारों की चर्चा तथ्यों, संवैधानिक मूल्यों और सामाजिक वास्तविकताओं के साथ होनी चाहिए, असहमति किसी समुदाय की गरिमा पर हमला न बने। इक्कीसवीं सदी में आंदोलनों के मंच और स्वरूप बदले। वर्ष 2011 के भ्रष्टाचार-विरोधी आंदोलन ने लोकपाल की माँग को

राष्ट्रीय विमर्श में प्रमुखता दी। वर्ष 2012 में दिल्ली की सामूहिक बलात्कार की घटना के बाद हुए प्रदर्शनों ने महिला सुरक्षा और न्याय व्यवस्था में सुधार की माँग को व्यापक स्वर दिया। नागरिकता संशोधन कानून के विरोध, किसान आंदोलन और भर्ती परीक्षाओं से जुड़े प्रदर्शनों ने भी अलग-अलग मुद्दों पर जनभागीदारी दिखाई। इनके उद्देश्य और परिणाम एक जैसे नहीं थे, प्रत्येक आंदोलन का मूल्यकान उसके अपने संदर्भ और प्रमाणों के आधार पर होना चाहिए। आज डिजिटल माध्यम जनआवाज को तेजी से फैलाते हैं। एक वीडियो हजारों लोगों को जोड़ सकता है, लेकिन लोकप्रियता सत्य का प्रमाण नहीं। पुरानी तस्वीर, अधूरा विवरण या अणुष्ट आरोप जनभावनाओं को भटका सकते हैं। इसलिए युवा संदेश साझा करने से पहले स्रोत जाँचें, प्रमाण खोजें और गलती सामने आने पर उसे सुधारने का साहस रखें। डिजिटल सक्रियता का अर्थ केवल संदेश फैलाना नहीं, जिम्मेदारी से सूचना देना भी है। वर्तमान की एक ठोस चुनौती भर्ती परीक्षाओं की विश्वसनीयता है। संसद ने वर्ष 2024 में लोक परीक्षा (अनुचित साधन

निवारण) अधिनियम पारित किया, जो 21 जून 2024 से प्रभावी हुआ। यह सार्वजनिक परीक्षाओं में अनुचित साधनों को रोकने के लिए कानूनी आधार प्रदान करता है, लेकिन कानून बनाओ हर परीक्षा में निष्पक्षता सुनिश्चित हो जाना अलग बातें हैं। प्रभावी क्रियान्वयन, समयबद्ध जाँच और दोषियों पर नियमानुसार कार्रवाई आवश्यक है। चिपको आंदोलन ने जंगलों की रक्षा में स्थानीय समुदायों, विशेषकर महिलाओं, की भागीदारी का महत्व दिखाया। सूचना का अधिकार आंदोलन ने सरकारी कामकाज में पारदर्शिता की माँग को मजबूत किया। ये उदाहरण बताते हैं कि आंदोलन की सार्थकता केवल विरोध में नहीं, अधिकारों के प्रति जागरूकता और स्थायी समाधान के निर्माण में भी है।

युवा आंदोलनों को पाँच कसेटियों पर परखें—सत्य, न्याय, अहिंसा, समाधान और उत्तरदायित्व। आरोप प्रमाण पर आधारित हों, माँग स्पष्ट हो, विरोध शांतिपूर्ण हो और नेतृत्व पारदर्शी हो। सरकार का दायित्व है कि शिकायतों की समयबद्ध सुनवाई करे, भर्ती प्रक्रियाएँ निष्पक्ष बनाए, रोजगार एवं कौशल के अवसर बढ़ाए और शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों से संवाद करे। नागरिक की आवाज और सत्ता की सुनने की क्षमता, दोनों लोकतंत्र की परीक्षा हैं।

आंदोलन और निर्माण एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। पढ़ाई छोड़कर नारा लगाना और पढ़ाई के नाम पर अन्याय से आँखें मूँदना, दोनों अधूरे रास्ते हैं। युवा को शिक्षा, कौशल, रोजगार और सामाजिक जिम्मेदारी साथ लेकर चलनी है। उसे केवल व्यवस्था का आलोचक नहीं, बेहतर व्यवस्था का निर्माता बनना होगा। वैदिक परंपरा का संदेश ह्यचरेवेति, चरेवेतिह्य निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। आज इसका अर्थ है—अज्ञान से ज्ञान, अन्याय से न्याय, विभाजन से सहयोग और आक्रोश से उत्तरदायित्व की ओर बढ़ना। अंततः युवा की विजय केवल सत्ता परिवर्तन में नहीं, ऐसी व्यवस्था के निर्माण में है जहाँ अन्याय के विरुद्ध बार-बार आंदोलन करने की विवशता कम हो। युवा को गलत दिशा में दौड़ती गाड़ी रोकना भी आना चाहिए और उसे सही दिशा में चलाने की योग्यता भी अर्जित करनी चाहिए। जब युवा इतिहास से प्रेरणा ले, वर्तमान की सच्चाई पहचाने और भविष्य के समाधान गढ़े, तब आंदोलन शोर नहीं रहता—वह राष्ट्रनिर्माण की शक्ति बन जाता है।

मुखौटा या प्रॉक्सी बनकर, सत्तारूढ़ पार्टी और व्यवस्था को अस्थिर करना, और देश हित को नुकसान पहुंचाना, ही मकसद रह गया है।

यहीं पश्चिम और भारत के आंदोलनों में फर्क नजर आता है। पश्चिम के कई युवा आंदोलन शिक्षा, आवास, सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक गैरबराबरी जैसे मुद्दों पर केंद्रित हैं। भारत में भी ऐसे मुद्दे मौजूद हैं, लेकिन कुछ युवा आंदोलन जल्द ही सियासी खींचतान का अखाड़ा बन जाते हैं।

मंत्री का इस्तीफा मांगना आसान है। लेकिन परीक्षा प्रणाली को दुरुस्त करना मुश्किल। सरकार को गाली देना आसान है। लेकिन ऐसी व्यवस्था बनाना कठिन, जिसमें किसी गरीब छात्र के साथ नाईसाफी न हो। इस्तीफा एक घटना है, सुधार एक प्रक्रिया। दोनों को एक समझना सबसे बड़ी भूल है।

हर आंदोलन क्रांति नहीं होता! पश्चिम के हर छात्र आंदोलन को आदर्श मानना भी गलत होगा। वहां भी हिंसा होती है, संपत्ति को नुकसान पहुंचता है और राजनीतिक दल युवाओं के गुस्से का फायदा उठाते हैं। भारत में भी छात्र आंदोलनों की गौरवशाली परंपरा रही है। आजादी की लड़ाई से लेकर आपातकाल तक, नौजवानों ने अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई है। साठ और सत्तर के छात्र आंदोलन व्यवस्था परिवर्तन के आदर्श और सपने से जुड़े थे। बिहार आंदोलन का लक्ष्य संपूर्ण क्रांति था। मगर कॉंकरोच आंदोलन व्यक्ति विशेष के स्तोंफ से जुड़ा है।

जो आंदोलन शिक्षा, रोजगार, बराबरी और जवाबदेही की मांग करता है, वह लोकतंत्र को मजबूत कर सकता है। लेकिन

जब आंदोलन निजी स्वार्थ, राजनीतिक कठपुतलीपन या नफरत का औजार बन जाए, तो उसका मकसद ही धुंधला पड़ जाता है।

हर विरोध देशविरोध नहीं होता। सरकार से सवाल पूछना नागरिक का हक है। मगर असहमति और अराजकता के बीच की लकीर भी मिटनी नहीं चाहिए।

युवाओं को तय करना होगा कि वे बदलाव के सिपाही बनना चाहते हैं या किसी और की सियासी बिसात के मोहरे।

सरकारें कब तक आंखें मूंदेंगी?

युवाओं को अच्छी शिक्षा चाहिए। पारदर्शी परीक्षाएँ चाहिए। सम्मानजनक रोजगार चाहिए। सस्ते मकान चाहिए। सबसे बढ़कर, उन्हें ऐसा भविष्य चाहिए जिसमें मेहनत करने का कुछ मतलब हो।

सरकारें यदि इन सवालों से मुंह मोड़ेंगी, तो गुस्सा बढ़ेगा। राजनीतिक दल उस गुस्से को अपनी सुविधा के मुताबिक इस्तेमाल करेंगे। कभी वामपंथ, कभी दक्षिणपंथ, कभी जाति, कभी धर्म। नौजवानों की असली समस्याएं फिर नारों के शोर में दब जाएंगी।

और भारत के कॉंकरोचों को भी सोचना होगा। अपमान को ताकत बनाना अच्छी बात है, लेकिन उस ताकत का इस्तेमाल किसलिए होगा? व्यवस्था सुधारने के लिए या सिर्फ तमाशा खड़ा करने के लिए? आखिर कॉंकरोच हों या क्रांतिकारी, पेट, पढ़ाई और भविष्य के सवाल सबके सामने खड़े हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि कोई इन सवालों के जवाब मांग रहा है, और कोई सवाल पूछने वालों की आवाज में अपना सियासी सुर मिला रहा है।

नौजवानों की असली पहचान उनके नारों से नहीं, उनके मकसद से होगी।

दिनांक 20 अक्टूबर 2026 मंगलवार

प्रिय पाठकों, TNF टुडे हमेशा आपकी सुविधा को सर्वोपरि रखता है। इसी उद्देश्य से हम आपको एक दिन अग्रिम (Advance)

राशिफल प्रदान कर रहे हैं ताकि आप अपने महत्वपूर्ण कार्यों, बैठकों और यात्राओं की योजना आज रात ही बना सकें। सितारों की चाल

जानकर संभावित चुनौतियों के प्रति पहले से सज्जग रहना ही सफलता की पहली सीढ़ी है।

फल दान करें जिससे आपके जीवन में निरंतर शांति बनी रहे।

वृश्चिक

आज आपके सोचे हुए सभी सरकारी और कानूनी कार्य बिना किसी रुकावट के समय पर पूरे होंगे। अपने स्वास्थ्य का थोड़ा ध्यान रखें और दिनचर्या को पूरी तरह संयमित रखने का प्रयास करें। सुंदरकांड का पाठ करें जिससे आपके सभी विरोधी और शत्रु शांत रहें।

धनु

आज भाग्य का पूरा साथ मिलने से आपके सभी अटक हुए प्रोजेक्ट तेजी से आगे बढ़ेंगे और मन प्रफुल्लित रहेगा। धार्मिक गतिविधियों और सेवा कार्यों में आपकी गहरी रुचि रहेगी जिससे आत्मिक शांति मिलेगी। जरूरतमंद विद्यार्थियों को पठन सामग्री दान करें जिससे आपके मार्ग प्रशस्त हों।

मकर

आज नौकरीपेशा लोगों को पदोन्नति या नई जिम्मेदारी मिलने के बहुत ही सुंदर योग बन रहे हैं। पैतृक संपत्ति से जुड़ा कोई पुराना विवाद आपसी बातचीत से सुलझ सकता है। हनुमान मंदिर में जाकर चमेली के तेल का दीपक जलाएं

जिससे आपके करियर की बाधाएं समाप्त होंगी।

कुंभ

आज आध्यात्मिक और सामाजिक कार्यों में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और किसी महत्वपूर्ण यात्रा का योग बनेगा। व्यावसायिक साझेदारों के साथ संबंध मजबूत होंगे जिससे व्यापार में बड़ा मुनाफा मिलेगा। बंदरों को गुड़ और चना खिलाएं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति और अधिक मजबूत हो।

आज का वास्तु शोधनम स्रू

मंगलवार के दिन घर की दक्षिण दिशा को पूरी तरह स्वच्छ रखकर वहाँ लाल रंग का ध्वज लगाने तथा मुख्य द्वार पर सिंदूर और गंगाजल छिड़कने से घर का गंभीर वास्तु दोष समाप्त होता है तथा हनुमान जी की कृपा से घर में अदम्य साहस और अखंड सुरक्षा का वास होता है।

गुटखा विवाद के बाद पल्लेदार की संदिग्ध मौत, गांव में मचा हड़कंप

दुकानदार पर मारपीट का लगाया आरोप, पोस्टमार्टम रिपोर्ट से खुलेगा राज

टीएनएफ टुडे, कासगंज।

थाना क्षेत्र के ग्राम पवसरा में रविवार सुबह एक युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत से सनसनी फैल गई। मृतक के परिजनों ने दुकान संचालक और उसके बेटों पर मारपीट करने और उसी के बाद तबीयत बिगड़ने से मौत का गंभीर आरोप लगाया है। वहीं, पुलिस और स्थानीय लोगों के बयानों से मामला कई उलझे हुए पहलुओं में घिर गया है। फॉरेंसिक टीम ने मौके पर पहुंचकर साक्ष्य जुटाए हैं और शव को पोस्टमार्टम के कासगंज भेज दिया गया है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, रविवार सुबह करीब 6:00 बजे ग्राम पवसरा के चौकीदार इंद्रजीत पुत्र सेवासिंह ने थाना पुलिस को सूचना दी कि गांव में एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई है। सूचना मिलते ही प्रभारी निरीक्षक कोतवाली कासगंज पुलिस बल के साथ तत्काल मौके पर पहुंचे।

जांच में पता चला कि मृतक उमेश पुत्र गुलाब सिंह, उम्र 22 वर्ष की शनिवार-रविवार की मध्य रात्रि करीब 1:00 बजे मौत हो गई थी। मृतक चार भाई-बहन हैं, जिनमें उसके अन्य भाई-बहन होशियार



सिंह (30 वर्ष), नेकसेलाल (24 वर्ष) और बहन किरण (16 वर्ष) हैं।

मृतक के पिता गुलाब सिंह ने आरोप लगाया कि शनिवार दोपहर करीब 4:00 बजे उमेश गल्ला मंडी कासगंज से पल्लेदारी का काम करके घर लौट रहा था। इसी दौरान मंडी के पास स्थित रामखिलाड़ी पुत्र राजाराम, निवासी पवसरा, उम्र करीब 50 वर्ष की परचून की दुकान के खोखे से उसने गुटखा खरीदा और 100 रू. का नोट दिया।

आरोप है कि शेष पैसे वापस करने को लेकर दोनों के बीच विवाद हो गया, जिसके बाद रामखिलाड़ी और उसके तीन बेटों—टीटू (25 वर्ष), सचिन (18 वर्ष) और रिकू (22 वर्ष)—ने मंडी के सामने खोखे पर ही उमेश के साथ

मारपीट की। मारपीट के बाद उमेश अपने घर लौट आया था। परिजनों का कहना है कि रात्रि करीब 1:00 बजे अचानक उसकी तबीयत बिगड़ी और उसकी मौत हो गई। हालांकि, परिजनों ने न तो समय रहते उमेश को अस्पताल पहुंचाया और न ही पुलिस को घटना की सूचना दी।

प्रारंभिक जांच और ग्रामीणों से पूछताछ में कुछ अन्य तथ्य भी सामने आए हैं। प्रारंभिक जांच में पता चला कि मृतक उमेश प्रतिदिन शराब का सेवन करता था और घटना के बाद उसके मुंह से शराब की बदबू आ रही थी। वहीं, ग्राम प्रधान देवेन्द्र ने पुलिस को बताया कि मृतक को मिर्गी के दौर भी पड़ते थे। पुलिस के मुताबिक, मृतक के शरीर पर प्रथम दृष्ट्या कोई स्पष्ट

- गुटखे के रूपाये लौटाने को लेकर विवाद होने का आरोप।
- परिजनों का दावा, मारपीट के बाद रात में बिगड़ी उमेश की तबीयत।
- शरीर पर स्पष्ट बाहरी चोट नहीं मिली, पुलिस सभी पहलुओं से कर रही जांच।

बाढ़ या प्राणघातक चोट के निशान नहीं मिले हैं। शव को हिलाने-डुलाने पर मुंह से पानी जैसा तरल पदार्थ निकल रहा है।

पुलिस और फॉरेंसिक टीम की कार्रवाई

घटना की गंभीरता को देखते हुए थाना पुलिस के साथ फॉरेंसिक टीम ने भी घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण किया। संदिग्ध परिस्थितियों के चलते हत्या की आशंका फिलहाल संदिग्ध प्रतीत हो रही है। पुलिस मौत के वास्तविक कारणों का पता लगाने के लिए सभी संभावित पहलुओं पर गहनता से जांच कर रही है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचायतनामा भरने के बाद पोस्टमार्टम गृह भेज दिया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के असली कारणों का खुलासा हो सकेगा।

बीच चौराहे पर बदमाशों का तांडव! युवक को पीटकर बाइक लूटी, फिर फरार

भाई को लेने बस स्टैंड जा रहा था युवक, पुलिस और एसओजी ने शुरु की जांच

टीएनएफ टुडे, कासगंज।

शनिवार की रात कोतवाली कासगंज क्षेत्र में बदमाशों के हौसले बुलंद नजर आए। देहारी गेट चौराहे के पास बाइक सवार तीन अज्ञात बदमाशों ने एक युवक को रोककर उसके साथ मारपीट की और उसकी मोटरसाइकिल लूटकर फरार हो गए। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया और स्थानीय पुलिस तुरंत मौके पर दौड़ पड़ी।

थाना प्रभारी जगदीश चंद द्वारा बताया गया कासगंज कोतवाली क्षेत्र के ग्राम मिहारी निवासी मानपाल पुत्र कुंवरपाल उम्र करीब 32 वर्ष शनिवार की रात करीब 10:35 ने बजे अपने छोटे भाई गुलाब सिंह और मौसेरे भाई दीपक को लेने



कासगंज बस स्टैंड जा रहे थे, जो दिल्ली से लौट रहे थे।

जब मानपाल अपनी होंडा शाइन मोटरसाइकिल (रंग भूरा, पंजीकरण संख्या वटह-87-ऋ9170) से देहारी गेट चौराहे के पास पहुंचे, तो वहां पहले से ही तीन अज्ञात व्यक्ति बीयर पी रहे थे और उनकी बाइक किनारे खड़ी थी। बदमाशों ने अचानक मानपाल की बाइक को रोक लिया और उनके मुंह पर घूसा

महागौरी के दर्शन को उमड़े भक्त, मंदिरों में गूंजे जयकारे

टीएनएफ टुडे, कासगंज।

दुर्गाष्टमी पर्व रविवार को उत्साह के साथ मनाया गया। देवी मंदिरों में दिनभर श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रही। लोगों ने सौभाग्य, धन संपदा, सौंदर्य और स्त्री गुणों की अधिष्ठात्री देवी महागौरी की पूजा कर मन्त मांगी। मंदिरों पर हलुवा और चने के प्रसाद का वितरण किया गया।

श्रद्धालु ब्रह्म मुहूर्त में ही उठकर पर्व की तैयारियों में जुट गए। हाथों में पूजा की थाली, जल कलश लेकर मंदिरों की ओर जाते लोगों के उत्साह



का अतिरेक देखते ही बन रहा था। मंदिरों में पहुंचकर माता महागौरी का स्मरण कर पूजा अर्चना की। माता को श्रृंगार का सामान व चूनर चढ़ाई। माता चामुंडा मंदिर, माता

पथवारी मंदिर, माता शीतला मंदिर, प्रभुपार्क, मालगोदाम चौराहा स्थित देवी मंदिरों, हुल्का मंदिर, शांतापुरी कॉलोनी स्थित माता काली मंदिर, चित्रगुप्त कॉलोनी

- दुर्गाष्टमी पर देवी मंदिरों में सुबह से लगी श्रद्धालुओं की कतारें।
- माता को चुनरी और श्रृंगार सामग्री चढ़ाकर मांगी सुख-समृद्धि।
- मंदिरों में हलवा-चने का प्रसाद बांटा, भक्तिमय रहा माहौल।

स्थित देवी मंदिर सहित अन्य देवी मंदिरों पर लोग पहुंचे। घंटे घड़ियालों की गूंज से वातावरण धर्ममय नजर आ रहा था।

सोने की लंका धू-धूकर जली, जय श्रीराम के जयकारों से गूंजा पंडाल!

रामलीला में हनुमान-श्रीराम मिलन और लंका दहन का भव्य मंचन, दर्शक हुए भावविभोर

- हनुमान जी ने लंका पहुंचकर किया दहन
- श्रीराम-सुग्रीव मित्रता और बाली वध का मंचन
- सुरक्षा के लिए मुखैट रहा पुलिस प्रशासन

टीएनएफ टुडे, कासगंज।

श्री रामलीला कमेटी के तत्वावधान में रविवार को आयोजित रामलीला मंचन में कलाकारों ने सजीव प्रस्तुतियां देकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। रात्रि आठ बजे मंच पर श्री राम एवं श्री हनुमान जी के मिलन की जीवंत प्रस्तुति ने सभी को भावविभोर कर दिया।

इससे पूर्व, श्रीराम एवं सुग्रीव की मित्रता के संवाद और बाली उद्धार का सुंदर मंचन किया गया। हनुमान जी ने लंका प्रस्थान के दौरान सुरसा वध की लीला का मंचन किया। इसके बाद शाम को सोरों गेट हनुमान मंदिर से प्रभु पार्क में निर्मित



सोने की लंका के दहन का मुख्य आकर्षण रहा, जहां हनुमान जी ने लीला के तहत लंका दहन किया कार्यक्रम का निर्देशन वृंदावन के श्री भावेश भारद्वाज ने किया। अनुष्ठान के पुरोहित पं. ओम

हादसे में उजड़े परिवारों के बीच पहुंचे धीरेंद्र तोमर



टीएनएफ टुडे, सिधपुरा।

बेलोन माता दर्शन को गए श्रद्धालुओं की गाड़ी टकराने से पांच लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। गांधील श्रद्धालुओं का आगरा के निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है। परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। इसी बीच पीड़ित परिवार से धीरेंद्र तोमर के साथ सामाजिक कार्यकर्ता रतन प्रकाश,राजेश कुमार सहित दर्जनों लोग शामिल रहे।



खेत में सांप ने डसा, जहरीले सर्प को लेकर अस्पताल पहुंचे परिजन

कासगंज। जनपद के सोरों थाना क्षेत्र के गांव कुमरिया में रविवार सुबह खेत में काम कर रहे एक युवक को सांप ने काट लिया। सर्पदंश से घायल युवक को परिजनों ने जिला अस्पताल में भर्ती कराया। परिजन सांप को भी पकड़कर अस्पताल ले आए। जानकारी के अनुसार, गांव कुमरिया निवासी अंकित पुत्र दामोदर रविवार सुबह करीब 9:30 बजे अपने खेत में बाजरे की पुआल एकत्रित कर रहा था। इसी दौरान सांप ने उसके बाएं हाथ की हथेली में काट लिया। अंकित की पुकार सुनकर खेत में काम कर रहे अन्य परिजन मौके पर पहुंचे। इसके बाद परिजन अंकित को सांप सहित जिला अस्पताल लेकर पहुंचे और उसे भर्ती कराया। अस्पताल में चिकित्सक ने सांप को देखकर उसके रसल वाइपर प्रजाति का होने की जानकारी दी। चिकित्सक के अनुसार, यह प्रजाति बेहद जहरीली और खतरनाक होती है। युवक का जिला अस्पताल में उपचार किया गया।

छ्त से गिरा 3 साल का मासूम, गंभीर हालत में आगरा रेफर



कासगंज। जनपद के गंजुंडवारा थाना क्षेत्र के गांव चिरोला में रविवार सुबह छ्त से गिरकर तीन वर्षीय मासूम गंभीर रूप से घायल हो गया। परिजन उसे उपचार के लिए अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां हालत गंभीर होने पर चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद आगरा रेफर कर दिया। जानकारी के अनुसार, गांव चिरोला निवासी धर्मेन्द्र का तीन वर्षीय पुत्र राघव रविवार सुबह करीब आठ बजे अपने घर की छत पर खेल रहा था। इसी दौरान अचानक वह छत से नीचे गिर गया, जिससे उसके गंभीर चोटें आईं। राघव की मां कंचन के अनुसार, हादसे के बाद परिजन आनन-फानन में उसे गंजुंडवारा के सरकारी अस्पताल लेकर पहुंचे। वहां चिकित्सकों ने उसकी गंभीर हालत को देखते हुए जिला अस्पताल कासगंज रेफर कर दिया। जिला अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद हालत गंभीर होने पर उसे बेहतर उपचार के लिए आगरा रेफर कर दिया गया।

नशे में धुत युवकों का हंगामा, जीआरपी ने दोनों को दबोचा

यात्रियों में मची अफरा-तफरी, मेडिकल कराकर मजिस्ट्रेट के सामने किया पेश

टीएनएफ टुडे, कासगंज।

जीआरपी कासगंज पुलिस ने रविवार दोपहर रेलवे स्टेशन के सकुल्लेंटिंग एरिया में शराब के नशे में धुत होकर आपस में मारपीट और हंगामा करने वाले दो युवकों को गिरफ्तार कर लिया। दोनों आरोपी स्टेशन परिसर और टिकट घर के पास यात्रियों के लिए असुविधा व अशांति पैदा कर रहे थे। पुलिस ने वैधानिक कार्रवाई करते हुए दोनों का चिकित्सीय परीक्षण कराया है।

जीआरपी थाना प्रभारी कोमल कुंदन ने बताया चलती ट्रेनों और रेलवे स्टेशनों पर आपराधिक गतिविधियों की रोकथाम तथा वांछित अपराधियों की धरपकड़ के लिए



सघन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। इसी अभियान के तहत रविवार दोपहर करीब 2:15 बजे कासगंज रेलवे स्टेशन के सकुल्लेंटिंग एरिया में टिकट घर के पास दो लोग शराब के नशे में आपस में उलझ गए और जोरदार हंगामा करने लगे।

अचानक हुए इस हंगामे से मौके पर मौजूद रेल यात्रियों में अफरा-तफरी मच

गई और लोगों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ा। सूचना मिलते ही गश्त कर रही जीआरपी पुलिस टीम तुरंत मौके पर पहुंची और दोनों को हिरासत में ले लिया।

गिरफ्तार आरोपी:देवेन्द्र सिंह 39 वर्ष पुत्र भान सिंह, निवासी भन्तपुरवा, थाना ठटिया, जनपद कन्नौज।

संदीप 40 वर्ष पुत्र कुँवर सिंह, निवासी कैला गाँव, थाना राजा का रामपुर, जनपद एटा। जीआरपी थाना पुलिस के अनुसार, दोनों आरोपियों के खिलाफ संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की गई है। चिकित्सीय परीक्षण कराने के बाद दोनों को कार्यपालक मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया गया।



के नेतृत्व में तत्काल मौके पर पहुंच गए। कार्यकर्ताओं ने विरोध दर्ज कराते हुए लिखावट को पूरी तरह साफ किया और वहां 'भारत माता की जय' लिख दिया।

त्योहारों से पहले बाजार में जाम, पुलिस ने संभाली कमान

- त्योहारों की खरीदारी के चलते मुख्य मार्गों पर वाहनों की लंबी कतारें लगीं।
- पुलिस ने बेतरीब खड़े वाहन हटाकर खुलवाया जाम।

टीएनएफ टुडे, सहावर।

आगामी शारदीय नवरात्र और आगामी पर्वों के मद्देनजर सुरक्षा व्यवस्था और यातायात को सुचारू बनाने के लिए सहावर पुलिस पूरी तरह मुस्तैद नजर आ रही है। रविवार को कस्बे के मुख्य मार्गों पर बढ़ती भीड़ और चरमराई यातायात व्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए थाना प्रभारी राधेश्याम ने खुद मोर्चा संभाला। भारी पुलिस बल के साथ



उन्होंने सड़क पर उतरकर व्यवस्था का जायजा लिया और जगह-जगह लग रहे जाम को खुलवाया। त्योहारों का सिलसिला शुरू होने के साथ ही सहावर के बाजारों में खरीदारों की भारी भीड़ उमड़ने लगी है। रविवार का दिन होने और पर्वों की तैयारियों के चलते मुख्य बाजारों और चौराहों पर वाहनों का भारी दबाव देखने को मिला। स्थिति यह

हो गई थी कि मुख्य मार्गों पर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और राहगीरों तथा दुकानदारों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। जाम की सूचना मिलते ही थाना प्रभारी राधेश्याम पुलिस बल के साथ तुरंत मौके पर पहुंचे। उन्होंने यातायात को बाधित कर रहे बेतरीब खड़े वाहनों को हटावाया और सड़क किनारे सामान रखकर

रास्ता संकरा करने वाले दुकानदारों को कड़ी हिदायत दी। पुलिस की सख्ती के बाद कुछ ही देर में यातायात सुचारू हो गया, जिससे आवागमन करने वाले लोगों और खरीदारी करने आए श्रद्धालुओं ने राहत की सांस ली।

पुलिस की अपील: प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि आगामी शारदीय नवरात्र और पर्वों के दौरान शांति व्यवस्था और सुगम यातायात प्राथमिकता है। दुकानदारों से अपील की गई है कि वे अपनी दुकानों के बाहर अतिक्रमण न करें, अन्यथा सख्त कार्रवाई की जाएगी। त्योहारी सीजन के मद्देनजर कस्बे में पुलिस गश्त और निगरानी बढ़ा दी गई है।

नोट- सयासी सिरमौर कॉलेम में हम उन व्यक्तित्वों की कहानी प्रकाशित करते हैं जिनके पास 10 सालों का सक्रिय राजनीतिक अनुभव है और संगठन के प्रति अटूट निष्ठा है। अगर आप भी खुद को मानते हैं सियासी सिरमौर, तो अपनी कहानी हमें हमारे व्हाट्सएप नंबर 9412359817 पर भेजें।